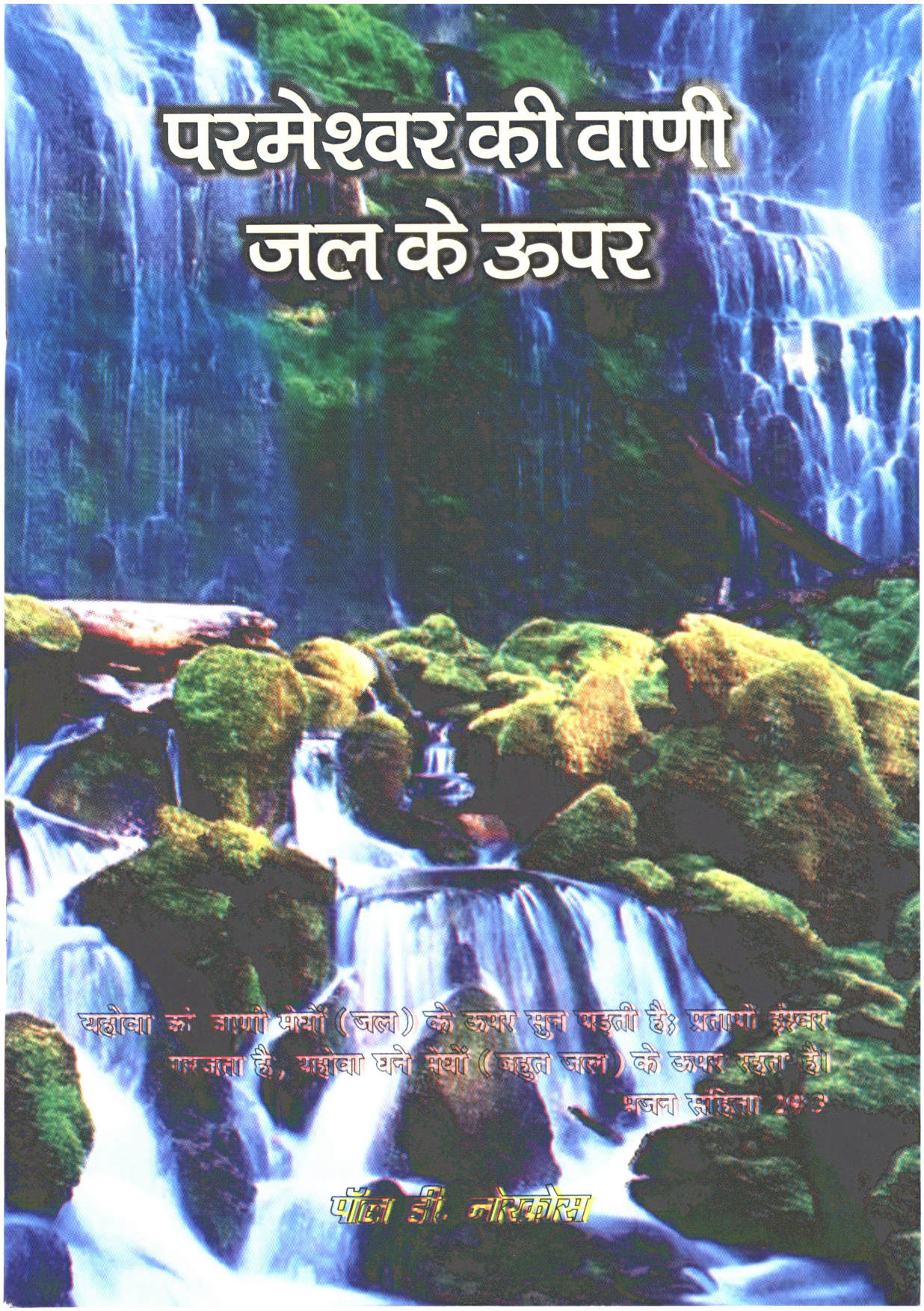

परमेश्वर की वाणी जल के ऊपर

यहोवा की वाणी मेघों (जल) के ऊपर सुन पड़ती है; प्रतापी ईश्वर गरजता है, यहोवा घने मेघों (बहुत जल) के ऊपर रहता है।

भजन संहिता 29:3

पॉल डी. नोरकोस

परमेश्वर की वाणी जल के ऊपर

यहोवा की वाणी मेघों (जल) के ऊपर सुन पड़ती है;
प्रतापी ईश्वर गरजता है,
यहोवा घने मेघों (बहुत जल) के ऊपर रहता है।

भजन संहिता 29:3

पॉल डी. नोरक्रोस

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

परमेश्वर की वाणी जल के ऊपर

विषय सूची

1. हमारे हृदय की पुकार 4
2. जीवन की नदी 7
3. उसकी/परमेश्वर की वाणी जल के ऊपर 12
4. जीवन जल के सोते को न त्यागें 16
5. मेरे पिता के घर में 23
6. उसके/परमेश्वर के हृदय की अभिलाषा 33
7. मेम्ना उनकी रखवाली करेगा 36

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org

© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अध्याय-1

हमारे हृदय की पुकार

फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झनकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचोंबीच बहती थी।

प्रकाशितवाक्य 22:1

परमेश्वर के वचन में (बाइबिल), जल एक आत्मिक सच्चाई को प्रस्तुत करता है : परमेश्वर का अनन्त जीवन जल की तरह उसके सिंहासन से उसके लोगों तक बहता है। उसका जीवन, जो हमेशा से था और जो हमेशा तक रहेगा, वह अपना जीवन निरन्तर उन लोगों में बहाता है जो इस जल के प्यासे हैं, और जो उसके पास पीने के लिए आते हैं।

क्या ये सब पहले भी सुना हुआ लगता है? ये शब्द हमें यीशु मसीह के द्वारा कहे गए उन शब्दों को याद दिलाते हैं, जो उसने पर्व्व के अंतिम, यरुशलेम में करीब दो हजार साल पहले कहे थे :

यूहन्ना 7:37-39

फिर पर्व्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशू खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।

जो मुझपर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।

उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशू अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

यह कौन सा जल है, इसको कैसे पाया जाता है और यह क्यों इतना महत्वपूर्ण है? यीशू मसीह अपने सुनने वालों को क्यों प्रोत्साहित करता है उस जल में से पीने के लिए जिसे केवल वो ही दे सकता है? इसी सच्चाई को क्यों यीशू मसीह ने कुएं के पास उस स्त्री से कहा, यूहन्ना की किताब, अध्याय चार में, और फिर अर्धशताब्दी के बाद दो और बार[1] अपने प्रेरित यूहन्ना से कहा जो प्रकाशित वाक्य में लिखित है? ऐसी क्या बात थी इस जीवन जल के विषय में जिसने उस स्त्री के हृदय को कुएं के पास इतना प्रभावित कर दिया था?

यूहन्ना 4:9-15

उस सामरी स्त्री ने उससे कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)।

यीशू ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उससे मांगती और वह तुझे जीवन का जल देता है।

स्त्री ने उससे कहा, हे प्रभू, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कुआं गहरा है :

तो फिर वह जीवन का जल कहां से आया? क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिसने हमें यह कुआं दिया; और आप ही अपने सन्तान और अपने ढोरों समेत उसमें से पीया?

यीशू ने उसको उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा।

---

1. प्रकाशित वाक्य 7:17 क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में, उनकी रखवाली करेगा; और उन्हें जीवनरूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालगा।

   प्रकाशित वाक्य 22:17 और आत्मा और दुल्हन दोनों कहती हैं, आ, और सुननेवाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन जल सेंतमेंत ले।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा : वरन जो जल मैं। उसे दूंगा, वह उसमें एक सीता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।

स्त्री ने उससे कहा, हे प्रभू, वह जल मुझे दें ताकि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने को इतनी दूर आऊं।

क्या आपके हृदय की भी पुकार इस प्रकार से है?

क्या आपका हृदय जीवन जल के उस झरने से पीने को प्यासा है, कि आप फिर कभी प्यासे न हों? क्या आपने इस आत्मिक जल के स्वाद को अपने मसीही जीवन में अनुभव किया है?

नि:संदेह यीशू मसीह ये आत्मिक जल सेंतमेंत उन लोगों को देने आये जो इसे ग्रहण करने की इच्छा रखते हैं। परन्तु सिर्फ ये जान लेना की ये परमेश्वर के वचन में लिखा है, उस जल को पाने के लिए काफी नहीं है, जिस प्रकार यह जान लेना कि रेगिस्तान के सफर से आए मनुष्य की प्यास केवल जल से ही बुझती है। जीवन जल आज भी उपस्थित है, यह जान लेना बहुत नहीं है परन्तु हमें परमेश्वर के उस सोते में से पीना भी चाहिए! इससे पहले कि हमसे कोई भूल हो—हमें यह जान लेना अवश्य है कि जीवन जल का सोता कोई किताब नहीं है, जिस प्रकार कांच का वो बर्तन जिससे पानी भरा जाता है वास्तव में पानी नहीं है। पवित्र शास्त्र (बाईबिल) इसी सोते से आया है, फिर भी वह अपने आपमें वह सींचा नहीं है। यीशू मसीह ही वह सींचा है। और जो विश्वासी इस सोते में से पीना सीख लेते हैं तो फिर कभी प्यासे नहीं होंगे।

इस पुस्तक का उद्देश्य यह है, कि यीशू मसीह जो जीवन जल का सोता है उससे पीना सीखे। हमें भी उस स्त्री की तरह प्यासा होना है जो कुएं के पास खड़ी थी, जो भिन्न धार्मिक शिक्षाओं/सिद्धान्तों के उस घड़े को त्यागने के लिए इच्छुक थी और यीशू मसीह के सोते से पीने का आनन्द उठाना चाहती थी।

परमेश्वर प्रतिदिन हमारे अंदर इस प्यास को बढ़ाता जाए। प्रतिदिन हम उसकी उपस्थिति में चलते रहें, और उसके सोते से पीते रहें। वह हमारे लिए उसे कुएं के समान हो जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहता है।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अध्याय-2

जीवन की नदी

और जहां जहां यह नदी बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देनेवाले जीवजन्तु जीएंगे :

यहेजकेल 47:9

भजन संहिता 1:1-3

क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!

परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन ध्यान करता रहता है।

वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।

हम सभी ने नदी के किनारे लगे पेड़ों को देखा है। और यह भी देखा है कि ये पेड़ सबसे विशाल, मजबूत और सबसे फलवन्त होते हैं क्योंकि इन पेड़ों को उस जल की, जिससे जीवन मिलता है कभी कमी नहीं होती। जिस तरह जल हमारे शारीरिक जीवन के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार जल एक मनुष्य के आत्मिक जीवन के लिए भी आवश्यक है। जल की कमी के कारण बढ़ना रुक जाता है। आत्मिक जल की कमी के कारण विश्वासिओं के आत्मिक जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है। परमेश्वर की लिखित व्यवस्था भी उसी सोते से आयी एक भविष्यवाणी के शब्द के समान : उस प्रकाशन के द्वारा जो परमेश्वर के पवित्र लोगों ने कहा

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

(और लिखा) जब पवित्र आत्मा ने उनकी अगुवाई की।[2]

ये वो स्त्री और पुरुष थे जिन्होंने निरन्तर उस पवित्र सोते में से जल को लिया (सींचा), जीवन जल का सोता, जीवन की नदी। ये नदी कभी नहीं सूखती।

यह एक वास्तविक नदी हैं जो सचमुच में है। परमेश्वर इस नदी के बीच में है (प्रकाशित वाक्य 22:1; यहेजकेल 47:9)। जब विश्वास करनेवाले इस जल को ढूंढ़ लेते हैं और इसमें से पीते हैं, तब उनका जीवन अद्‌भुत रीति से सफल होने लगता है। अनेक विश्वासियों ने परमेश्वर के बहुतायत के प्रबन्धों को पहले भी अपने जीवन में देखा है, शायद थोड़े अंशों में परन्तु हम इस स्थान में रहना चाहते हैं और हम इस स्थान में रहना चाहते हैं, और इस निरन्तर मिलने वाले जल में से पीना चाहते हैं। हमारा हृदय परमेश्वर की उस शान्ति से भरी हुई उपस्थिति में, जिसका उल्लेख करना असम्भव लगता है, हमें अति उत्साहित करता है कि हम उसकी प्रशंसा करें और हमारा हृदय उसके प्रेम के कारण जो वो हमसे करता है उसकी सुंदरता में आनन्दित होता है। इस स्थान में, एक नदी है परमेश्वर की भलाई और दया की, सामर्थ और शान्ति की, विश्वास और हमारे सृष्टिकर्ता के साथ संगति की जो अपने लोगों के बीच में रहना चाहता है।

भजन संहिता 46:1-5

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक।

इस कारण हमको कोई भय नहीं चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;

चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठे। (सेला)

---

2. 11 पतरस 1:20 21 पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास भवन में आनंद होता है।

परमेश्वर उस नगर के बीच में है, वह कभी बदलने का नहीं; पौं फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करता है।

परमेश्वर की यह नदी वो स्थान है जहां प्रत्येक मसीही एक पेड़ की तरह लगे रहना चाहता है। यह स्थान केवल उन्नति और फिर नया हो जाने के लिए ही नहीं, परन्तु चंगाई की भी है। परमेश्वर इस नदी तक हमारी अगुवाई करेगा, जहां वह हमारे प्राणों को नया बनाता है।

भजन संहिता 36:8

वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।

भजन संहिता 23:1-3

यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।

वह मुझे हरी हरी चराईयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; वह मेरे जी में जी ले आता है धर्म के मार्गों में वह अपने नाम के निमित मेरी अगुवाई करता है।

जीवन जल, जिसके बारे में अभी तक हमने पढ़ा (जिसको परमेश्वर की नपदी, सुखदाई जल, और जीवन की नदी कहा गयी है) यह नदी परमेश्वर के सिंहासन से निकलती है। यदि हम अपना ध्यान यहेजकेल की पुस्तक कि ओर ले जाएं तो पाते हैं कि यह जल परमेश्वर के पवित्र स्थान में उसके सिंहासन से बहता है।

यहेजकेल 47:1-12

फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व ओर बह रहा था। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी था और सोता भवन के पूर्व और वेदी के दक्खिन, नीचे से निकलता था। तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया, और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात् पूर्वमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया; और दक्खिनी अलग से

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

जल पसीजकर बह रहा था।

जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिए हुए पूर्व की ओर निकला, तब उसने भवन से लेकर, हजार हाथ तक उस सोते को मापा और मुझे जल में से चलाया, और जल ''टखनों'' तक था।

उसने फिर हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल घुटनों तक था, फिर और हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल कमर तक था।

तब फिर उसने एक हजार हाथ मापे और ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं ना जा सका, क्योंकि जल बढ़कर तैरने के योग्य था: अर्थात् ऐसी नदी थी जिसके पार कोई न जा सकता था।

तब उसने मुझसे पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तूने यह देखा है? फिर उसने मुझे नदी के तीर लौटाकर पहुंचा दिया।

लौटकर मैंने क्या देखा कि नदी के दोनों तीरों पर बहुत से वृक्ष हैं।

तब उसने मुझसे कहा, यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा: और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा: और उसका जल मीठा हो जाएगा।

और जहां जहां यह नदी बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देनेवाले जीवजन्तु जीएंगे और मछलियां भी बहुत हो जाएंगी: क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा और जहां कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे।

ताल के तीर पर मछुवे खड़े रहेंगे और एनगदी से लेकर ऐनेग्लैम तक वे जल फैलाए जाएंगे, और उन्हें महासागर की सी भांति भांति की अनगिनित मछलियां मिलेंगी।

परन्तु ताल के पास जो दलदल और गड्ढे हैं, उनका जल मीठा न होगा: वे खारे ही रहेंगे।

और नदी के दोनों तीरों पर भांति भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुर्झाएंगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से निकला है। उनमें महीने महीने नये नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के और पत्ते औषधि के काम आएंगे।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

ध्यान दें कि यह चंगाई और सामर्थ देनेवाला जल परमेश्वर के पवित्र स्थान से बहता है। इब्रानियों ८:२ यीशू मसीह इस पवित्र स्थान के सेवक हैं। यीशू मसीह इस स्थान में जहां से जीवन देनेवाला जल बहता है निरन्तर सेवकाई करते हैं। फिर, पर्व्व के अंतिम दिन हम उसके हृदय की पुकार की गहराई को देखते हैं उन प्यासे लोगों के लिए कि वो आएं और उस जल को इस स्थान से पीएं :

यूहन्ना 7:37-39

फिर पर्व्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशू खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी।

(उसने यह वचन और आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे: क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशू अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।)

तो क्या है यह जल? हम देख सकते है। कि यह एक विश्वासी के जीवन में क्या कर सकता है। हम परमेश्वर की अभिलाषा को देख सकते हैं जो हमें इस जल में से पीने के लिए उत्साहित करता है। हमने यह भी देखा कि इसका सम्बन्ध पवित्र आत्मा से है। परन्तु इस जल को कैसे पाया जाता है? इस जल को हम अपने लिए कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अध्याय-3

परमेश्वर की वाणी जल के ऊपर!

> *यहोवा की वाणी मेघों (जल) के ऊपर सुन पड़ती है; प्रतापी ईश्वर गरजता है, महोवा घने मेघों के ऊपर रहता है।*
>
> भजन संहिता 29:3

जल जो परमेश्वर के सिंहासन से बहता है वह परमेश्वर की वाणी का दृष्टान्त है। हमने पिछले अध्याय में भजन संहिता 46:5 में पढ़ा की परमेश्वर इस जल के बीच में है। उसकी वाणी इस जल के ऊपर है (भजन संहिता 29:3), उसी पवित्र आत्मा के द्वारा जो गहरे जल के ऊपर मण्डराता था, जो परमेश्वर की उस वाणी की बाट जोहता था। जिसके द्वारा पृथ्वी की सृष्टि हुई थी। परमेश्वर की वाणी के द्वारा पृथ्वी की रचना हुई और निरंतर उसकी वाणी पृथ्वी को संभाले रहती है।[3]

इब्रानियों 1:3 वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन* से संभालता है : वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिम के दाहिने जा बैठा।

आज भी, परमेश्वर की यूनानी रेमा वाणी है, जीवन जल रेमा शब्द जो परमेश्वर के पवित्र स्थान में उसके सिंहासन से बहता है, जिसे विश्वासियों को सुनना और उसके द्वारा जीवन व्यतीत करना चाहिए।[4] यही

---

3. इब्रानियों 11:3 विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।

* वचन : जिसका यूनानी शब्द है रेहमा, मुख से बोला हुआ वचन।

4. मत्ती 4:4
   उसने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है। जीवित रहेगा।
   व्यवस्था विवरण 8:3 को भी देखें जिसमें यही वचन लिखे हुए हैं, मरुस्थल की यात्रा के समय।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

वो नदी है जीवन देने वाले शब्दों की जो उसके सिंहासन से निकलकर प्रत्येक विश्वासी की आत्मा तक जाती है जो कलीसिया को जो यीशू मसीह की दुल्हन है, तैयार करती है।

इफिसियों 5:25-27

हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिए दे दिया। कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए।
और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो।

यह वचन हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण बन जाते हैं जब हम समझने लगते हैं कि किस रीति से मसीह की दुल्हन शुद्ध, तैयार और पवित्र और दोष रहित की जाती है *रेमा* शब्द के जल के स्नान के द्वारा।

इफिसियों 5:26 में 'वचन के द्वारा' जो वास्तव में *एन 'रेमा'* है, अर्थात् ''विश्राम की स्थिति अथवा लगातार शब्दों का बोला जाना।'' यह लगातार बोले जानेवाले शब्द, जो यीशू से आते हैं, उसके यह शब्द पवित्र आत्मा के माध्यम से आते हैं, ठीक उसी प्रकार से जैसे ये शब्द युहन्ना तक पहुंचे प्रकाशित वाक्य की पुस्तक लिखने के लिए। ये उसी जीवन जल शब्दों के सोते से हैं जो पौलुस ने नये नियम की पुस्तकों को लिखने के लिए प्राप्त किए थे, जिसके बारे में प्रेरित पौलुस कहते हैं : *हे भाईयों, मैं तुम्हें जताए देता हूं, कि जो सुसमाचार मैंने सुनाया है, वह मनुष्य का सा नहीं। क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से नहीं पहुंचा, और न मुझे सिखाया गया, पर यीशू मसीह के प्रकाश से मिला।*[5] यीशू मसीह का प्रकाशन जीवन जल के शब्दों के द्वारा पौलुस प्रेरित तक पहुंचा जो यीशू मसीह के पवित्र स्थान से आता है। पौलुस ने इन शब्दों को लिखा, ठीक उसी प्रकार जैसे युहन्ना ने प्रकाशित वाक्य के पहले अध्याय में लिखा। हमें भी आवश्यक है कि हम उस निरन्तर बहने वाले शब्दों की नदी में विश्राम करें जो यीशू अपने हृदय से प्रत्येक विश्वासी की आत्मा में बोलता है। इन्हीं शब्दों के द्वारा हमें

5. गलतियों 1:11-12

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

जीवन व्यतीत करना चाहिए—मत्ति 4:4 के *रेमा* शब्दों के द्वारा जो परमेश्वर के मुख से निकलते हैं।

बहुत बार हम यह सोचने लगते हैं कि प्रेरित यूहन्ना और पौलुस हमसे भिन्न अथवा हमसे अधिक ज्ञानवान थे परमेश्वर की भेड़ बनने के लिए जो परमेश्वर के शब्द को सुनती है (यूहन्ना 10:27)। परन्तु बाइबिल ऐसा नहीं सिखाती। हमें एक ही कुएं से पीना है, और इस *रेमा* शब्द को जीवन जल के झरने से पीना है, वो जल जो हमें धोकर साफ करता है और बिना किसी दाग या झुर्री के साथ निष्कलंक परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करता है, इस प्रकार हम उस दिन के लिए तैयार होते हैं जब दूल्हे का दुल्हन के साथ ब्याह होगा। प्रत्येक मनुष्य जो सत्य का है वो परमेश्वर की आवाज (शब्द) को सुनता है[6], और *जो परमेश्वर से होता है वो उसके शब्दों को सुनता है (रेमा शब्द को)।*[7] ये शब्द यीशू मसीह के थे जो उसने पिलातुस और यहूदियों से कहे थे जिन शब्दों को सुनकर उन्होंने तुरन्त उसका इन्कार कर दिया था।

प्रियों, हम उसका इन्कार नहीं करते जब हम यीशू मसीह को अपना प्रभू और उद्धारकर्ता अंगिकार करते हैं।

रोमियों 10:8-11, 17

परन्तु क्या कहती है? यह कि वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है,
जो हम प्रचार करते हैं।
कि यदि तू अपने मुंह से यीशू को प्रभू जानकर अंगीकार करें और अपने मन से विश्वास करें, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मूंह से अंगीकार किया जाता है।

क्योंकि पवित्र शास्त्र यह कहता है, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।

सो विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन (रेमा) से होता है।

---

6. यूहन्ना 18:37
7. यूहन्ना 8:47

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

जबकि हमें निश्चय है कि हमारा उद्धार हुआ है, यह सोचकर हम निश्चिन्त न रहें। हमें निरन्तर अपने पिता (परमेश्वर) के कामों में लगे रहना है, निरन्तर पवित्र आत्मा की बातों में बढ़ते जाना है :

- हमें सीखना है यीशू मसीह से प्रेम करना हो हमारा पहला प्रेम है (प्रकाशित वाक्य 2:1-7),
- हमें अपने हृदय को तैयार करना है कि हम उसके धीमे शब्द को सुन सकें।
  (श्रेष्ठगीत 2:14; 8:13-14; इब्रानियों 4:1 16; 12:25-29)
- हमें सीखना है कि हम किस प्रकार प्रत्येक प्रकाशन से भरे हुए *रेमा* शब्दों के द्वारा जीवन व्यतीत करें, वो मन्ना जो उसके मुख से निकलता है (मती 4:4; व्यवस्था विवरण 8:3)
- *रेमा* प्रकाशन को अनुमति दे की वो हमें आत्मिक रीति से धोकर साफ करें। (इफिसियों 5:26) और हमारे विश्वास को बढ़ाये (रोमियों 10:17)
- और हमें बलवा करने से, पाप से, टोन्हा से हठ से, दुष्टता से, मूर्त्ति पूजा से बचाकर रखे। (1 शमूएल 15:22-23)

उसकी *रेहमा* शब्द की नदी में हमें धोया जाना, यह हमारी तैयारी है, एक दुल्हन की तरह -जो बिना किसी दाग, झुर्री और दोष के हो। हमारा प्रिय (यीशु) उस दुल्हन के साथ ब्याह नहीं करेगा जिससे तो बात नहीं कर सकता हो, उस दुल्हन से जिसने अपने प्रिय की आवाज (शब्द) को सुनना नहीं सीखा हो, सबसे पहले एक भेड़ की तरह (यूहन्ना 10), और फिर एक प्रेमिका की तरह जो उसकी उपस्थिति से बहुत आनन्दित होती हो। हम उसकी उपस्थिति के लिए प्यासे होते हैं, और हम उसके कुएं में से पीने के लिए इच्छा रखते हैं, जो जीवन का सोता है, परमेश्वर की वाणी को सुनने के द्वारा जो मीठे जल के ऊपर है (भजन संहिता 46:4 5; 29:3 4; 36: 8 12)। परमेश्वर की उपस्थिति की महिमा उसकी वाणी में प्रकाशित होती है (उत्पत्ति 2:8; निर्गमन 33:12 23; 1 शमूएल क्या ही महिमा से भरपूर है, जो हमें उसके पास ले आते हैं।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अध्याय-4

जीवन जल के सोते को न त्यागें

> *क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं : उन्होंने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है, और उन्होंने हौद बना लिए, वरन् ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिनमें जल नहीं रह सकता।*
>
> थिर्मयाह 2:13

हमारा सम्बन्ध उसके साथ तब मजबूत होता है जब हम उसकी समीपता में आते हैं और उसके साथ अकेले अपने हृदय की वेदी पर समय व्यतीत करते हैं। जिस प्रकार मूसा ने परमेश्वर से निवास स्थान में भेंट की थी, उसी प्रकार हम भी अपनी आत्मा के निवास स्थान में परमेश्वर से भेंट करने का स्थान तैयार करते हैं। यह वो स्थान है जहां पर हम जीवन जल के सोते में से पीना सीखते हैं। बहुत पाप घटित होता है जब परमेश्वर के लोग इस झरने में से पीने में असफल हो जाते हैं। सबसे पहले, वह उस आवश्यक अनन्त जीवन देने वाले जल को अस्वीकार करते हैं जो उनके आत्मिक जीवन को परमेश्वर में स्थिर करने के लिए आवश्यक है। दूसरा, आत्मिक जल की आवश्यकता होते हुए भी, वह अपने मन के अनुसार उस आत्मिक जल का अविष्कार करते हैं। यही कारण है कि संसार-भर में अनेक धार्मिक ईश्वरज्ञान (अध्यात्मविद्या) है, और जिनमें से बहुत से तो अद्‌भुत प्रेम पर आधारित हैं। तो भी उनमें एक कमी है : जीवन जल की।

यह जल केवल यीशू मसीह के सोते से आता है। यही कारण है कि आज संसार के बड़े से बड़े धर्म भी यीशू के चमत्कारों को संसार में नहीं कर सकते। दु:ख की बात यह है कि, बहुत से मसीही भी इन चमत्कारों (अद्‌भुत काम/आश्चर्य कर्म) को नहीं कर पा रहे हैं? ऐसा क्यों हैं? अच्छा फल अच्छे पेड़ से आता है जो पानी से सींचा गया हो। जीवन जल अच्छे

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

आत्मिक फल को उपजाता है। जीवन जल से फल आना स्पष्ट हैं विश्वासी जो जीवन जल के सोते से पीते हैं उनके जीवन में स्पष्ट आत्मिक फल पाया जाता है। इस फल के अन्तर्गत परमेश्वर की स्वीकृति उनकी सेवकाई के लिए पायी जाती है--चिन्हों, सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों के साथ।[8] नि:संदेह खोए हुओं को जीतना भी इसके अंतर्गत आता है।

मरकुस 16 : 17–20

और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे; नई नई भाषा बोलेंगे: सांपों को उठा लेंगे; और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तो भी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे। निदान प्रभू यीशू उनसे बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।

और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभू उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ–साथ होते थे वचन को, दृढ़ करता रहा। आमीना।

यूहन्ना 14:12

मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

परन्तु सच्ची जीवन जल सेवकाई जो यीशू मसीह से होती है उसके अंतर्गत आश्चर्य के काम, चंगाइयां, दुष्ट आत्माओं को निकालना, प्रेरित के चिन्ह और पवित्र आत्मा के चिन्ह जैसे अन्य अन्य (नई नई) भाषाएं बोलना भी पाये जाते हैं।

यह जान लेना एक गंभीर बात है क्योंकि *मैं परमेश्वर हूं और मैं बदलता नहीं*[9], हम परमेश्वर की रीति को जिसे वो हमसे व्यवहार करने के लिए चुनता है हम उसी रीति को बदल नहीं सकते।

हमें उसके सोते में से पीने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, और इस

---

८. प्रेरितों के काम 2:22 हे इस्राएलियों, ये बातें सुनो : कि यीशू नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो।

९. मलाकी 3:6

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अनुसरण (पीछा करना जारी रखना) का फल परमेश्वर की सिद्ध आशीषों में व्यक्त होता है। यदि हम अपनी ही रीति के अनुसार सेवकाई करें, अपने जीवन और सेवकाई को अपने कप्तान (सेनापति) के प्रकाशन के बिना चलाएं तो हम कैन की तरह होंगे जिसने वास्तव में (सचमुच में) अपने कर्तव्य का एक हिस्सा परमेश्वर के सामने पूरा किया, परन्तु उसने परमेश्वर के प्रकाशन के अनुसार नहीं पर अपने ही विचार के अनुसार जैसे उसे ठीक लगा वैसे ही किया। उसका परिणाम? परमेश्वर ने उसके बलिदान को ग्रहण नहीं किया। कैन परमेश्वर से क्रोधित हो गया। ईर्ष्या से भरे हुए क्रोध के कारण, उसने अपना क्रोध अपने भाई पर निकाला और उसे घात कर दिया। हमें अपने धर्म के कार्यों को परमेश्वर की वाणी को सुनकर और आज्ञाकारी होकर उचित रीति से करना चाहिए।

अनेक सेवकाईयां हैं जो बहुत अच्छे कार्यों को कर रहीं हैं (अपने मनों में और उनके मनों में जो उनके पीछे हो लिए हैं) तो भी परमेश्वर ने अपनी स्वीकृति अलौकिक चिन्हों, चमत्कारों और अद्‌भुत कार्यों के द्वारा नहीं दिखाई है? मेरे मित्रों, उस प्रकाशन की अनुपस्थिति के कारण जो यीशू मसीह के सोते से मिलता है, मसीही लगनेवाली शिक्षाओं के जलाशय उत्पन्न हो जाते हैं, और इस कारण कलीसिया की कार्यसूची व्यस्तता से भर जाती है। परन्तु उनमें परमेश्वर की स्वीकृति के प्रमाण की कमी है। क्या हो गया है?

जिस तरह परमेश्वर के लोग मरुस्थल में उसकी आवाज सुनने में असफल होने के कारण नाश हो गए थे[10], इसी प्रकार से परमेश्वर आज भी अपने लोगों को उनकी मरुस्थल (मरुभूमि) की यात्रा में नाश होने की अनुमति देगा जब तक की वो परमेश्वर को सुनना और उसकी आज्ञा का पालन करना नहीं सीख लेते, इसलिए जीवन जल के सोते से पीना आवश्यक है, जो कि यीशू मसीह स्वयं है। तभी परमेश्वर उन्हें अनुमति देगा कि वे अपनी यर्दन नदि को पार करके आशीषों की नई वाचा के प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश कर सकें। तब तक कलीसिया, निर्बल, भ्रम-सहित, और फलहीन रहती है उस

10. यहोशू 5 6 क्योंकि इस्राएली तो चालीस वर्ष तक जंगल में फिरते रहे, जब तक उस सारी जाति के लोग अर्थात् जितने युद्ध के योग्य लोग मिस्र से निकले थे वे नाश न हो गए, क्योंकि उन्होंने यहोवा की न मानी थी (इब्रानी में 'शामा' का अर्थ है सुनना, ध्यान देना और आज्ञा मानना, समझना) : सो यहोवा ने शपथ खाकर उनसे कहा था, कि जो देश मैंने तुम्हारे पूर्वजों से शपथ खाकर तुम्हें देने को कहा था, और उस में दूध और मधु की धाराएं बहती हैं, वह देश मैं तुमको नहीं दिखाने का

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

शक्तिमान (शक्तिशाली) मसीह चाल की तुलना में जो परमेश्वर की आवाज सुनने और उसकी आज्ञा मानने का परिणाम है। यही वो आवाज है जो जीवन जल की तरह परमेश्वर के शरण स्थान से बहती है।

यीशु मसीह की कलीसिया निरन्तर उसकी आंखों की चमक है। कितना आनन्दित होता है वो अपनी दुल्हन के साथ व्यक्तिगत संगति रखने में! उसकी दुल्हन भी उसके लिए अत्यन्त अभिलाषी रहती है, अपने पहले प्रेम के लिए! यह उन लोगों का हृदय है जिन्हें यीशु तैयार कर रहा है, अपने प्रकाशन से भरे हुए, कभी न खत्म होने वाले शब्दों के जल के द्वारा धोकर। अपनी आत्मा (यूहन्ना 7:37-39) में उन्होंने परमेश्वर की वाणी के बहाव को सुनना सीख लिया है (*रीहओ जो रेमा शब्द की जड़ है*–यह वो यन्त्र क्रिया है जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी दुल्हन को तैयार कर रहा है राजा के साथ ब्याह के दिन के लिए; पवित्र आत्मा के जल से धोकर, उसे बिना किसी दाग, झुर्री के निर्दोष बना रहा है।

प्रकाशित वाक्य 3:20-22

देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।

जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।

जिस प्रकार राजा ने अपना राजदण्ड रानी एस्तेर को दिया, जिससे कि वो जिसे तैयार किया गया था राजा के सम्मुख जा सके, उसी प्रकार यीशु की दुल्हन को भी आज राजा (परमेश्वर) के सम्मुख जाने का अधिकार दिया गया है। हम भी यीशु के हृदय को मोहित कर देते हैं जिस प्रकार एस्तेर ने अपने पति के हृदय को मोहित किया था। उसके पति ने पहले बोला, और एस्तेर ने सुनना सीखा। उसने जय पाई, और उसे राजा के साथ उसके सिंहासन पर बैठने के लिए बुलाया गया। इसी तरह से वो सारे विश्वासी भी परमेश्वर के साथ उसके सिंहासन पर बैठेंगे वो उसकी आवाज जो जीवन जल के सोते से आती है उसे सुनने और आज्ञा मानने में गुणी हो जाएंगे।

परन्तु इस तैयारी का आरम्भ कैसे होता है? बाइबिल में इसके बहुत से उदाहरण हैं। उदाहरण के रूप में, प्रेरित पौलुस तीन साल के लिए अरब

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

देश गए थे, परन्तु वह बाइबिल की पढ़ाई के लिए नहीं गए थे। पवित्र शास्त्र तो उन्हें अच्छे प्रकार से मालूम था, और जो हमें भी मालूम होना चाहिए। निश्चय, जो प्रकाशन हम सोचते हैं हमें मिल रहा है वह परमेश्वर के वचन (बाइबिल) को अच्छे प्रकार से जाने बिना दृढ़ नहीं हो सकता।

परन्तु पौलुस अरब देश बाइबिल का और ज्ञान पाने के लिए नहीं गए थे, परन्तु परमेश्वर की आवाज को कैसे सुनना है यह सीखने के लिए गए थे। पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा वह यह सीखने के लिए गए थे कि परमेश्वर में जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिए, और उसमें चलना और अपने आपको उसमें कैसे बनाए रखना चाहिए। इस सबमें प्रेरित पौलुस को तीन साल का समय लगा था।

क्या हमें भी इतना समय लगेगा? यह तो निर्भर करता है? क्या आप अपने जीवन के तीन साल का समय लगाने के लिए इच्छुक होंगे यदि परमेश्वर आपको ऐसा करने को कहें? क्या आप सब कुछ बेचकर इस भूमि को खरीदने के लिए इच्छुक हैं जिसमें यीशू के साथ गहरी मित्रता का धन (खज़ाना) पाया जाता है या फिर आप उस धनवान पुरुष के समान हैं जिसने अपने पृथ्वी पर के धन को परमेश्वर से अधिक प्रेम किया, और इस कारण उस धन को यीशू मसीह के पीछे चलने के लिए त्याग नहीं पाया? कल्पना कीजिए कि यदि तीन साल के एक ट्रेनईंग कार्यक्रम में आप भाग लें और उसकी समाप्ति पर आपको दस मिलियन डॉलर देने की प्रतिज्ञा की जाए। तो क्या आप अगले तीन साल के लिए अपने वर्तमान व्यवसाय को छोड़ने को तैयार हो जाएंगे? क्यों विश्वासी लोग यीशू मसीह की जीवन जल आवाज को जानने में अपना लाभ नहीं देखते? क्या उसका धन (खज़ाना) अधिक बहुमूल्य नहीं है?

परमेश्वर ने पहले से ही प्रत्येक विश्वासी के लिए व्यक्तिगत पाठ्य पुस्तकों की सूची तैयार की हुई है। इसकी रचना प्रत्येक विश्वासी के लिए की गई है जिसकी सहायता से वो परमेश्वर के द्वारा दिए गए उस लक्ष्य (उद्देश्य) को पूरा कर सकें जब वह परमेश्वर के जीवन जल के सोते से पीना सीख लेंगे। हमारा रहन-सहन, अनेक तरह के समर्पण और बहुत सी और बातों में उलझे रहना यह वो धन (खज़ाना) है जिन्हें हम अधिकतर पकड़े रहते हैं। परन्तु उन्हें दृढ़ता से (कसकर) अपने हाथों में पकड़े रहने से, हम उस धनवान की तरह हो सकते हैं जो जीवन के उस सोते से धीरे--धीरे

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

पीछे हट गया क्योंकि परमेश्वर की पाठ्य पुस्तकों की सूची का दाम उसके सहने से बाहर था।

यीशू हमें कभी-भी किसी और कि सेवकाई को दोहराने को नहीं कहते। दोहराने का विचार हमारे अपने धार्मिक अविष्कार का एक जनाश्य (बर्तन) है। हम कल्पना करते हैं कि परमेश्वर हमें इस जगह के दूसरे छोर पर जाने के लिए कहेगा, अन्यथा गरीबी में जीवन व्यतीत करने को कहेगा। परमेश्वर हमसे बस इतना चाहता है कि हम उसकी आवाज सुने और उसकी आज्ञा का पालन करें। तो इसलिए परमेश्वर जो आपसे करने को कहेगा वो उससे जो वो मुझे करने को कहता है 'उस समान' (अलग भिन्न) होगा। उसने पतरस से कहा कि वो उस सेवकाई की ओर ध्यान न दे जो यूहन्ना करेगा। कुछ विश्वासी अनजान बातों से बहुत भय रखते हैं, और सामान्य बातों को कसकर पकड़े रहते हैं, जिस कारण वो परमेश्वर पर कभी-भी विश्वास नहीं कर पाते कि वो उनके जीवन का मार्ग दर्शन कर सकता है। जिसका परिणाम यह होता है कि उनका जीवन परमेश्वर की अद्भुत दिव्य (अर्थात् सुन्दर) कल्पना, योजना, उद्देश्य और वो स्वर्गीय मुकट जो परमेश्वर ने उनके लिए सुरक्षित रखे हैं, पाने में असफल होते हैं। यह सब इसलिए होता है क्योंकि वो हठ करके स्वीकार नहीं करते हैं अथवा जितना समय वो परमेश्वर की आवाज सुनने और उसकी आज्ञा मानने में लगाते हैं वो बिना उत्साह के होता है। मसीह में बहुत से प्रिय भाई और बहिन परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए प्रार्थना करते हैं (वो प्रार्थना जो स्पष्टता से बाइबिल में नहीं पायी जाती), परन्तु क्या एक बच्चे को अपने माता-पिता की इच्छा जानने के लिए प्रार्थना करने की जरूरत पड़ती है जिनके साथ उसका गहरा सम्बन्ध होता है? क्या वो माता-पिता निरन्तर उस बच्चे के समीप (पास) प्रेम के साथ सिखाने, अगुवाई करने और मार्ग दिखाने के लिए नहीं रहते? वो मनुष्य जो अपना समय अपने चरवाहे कि आवाज को सुनने और आज्ञा पालन करने में लगाता है वो इस जीवन में और आने वाले जीवन में सबसे अद्भुत लाभ-अंश प्राप्त करेगा।

मूसा के लोगों ने स्वयं उस पर्वत पर जाकर परमेश्वर की आवाज सुनने से इन्कार किया, परन्तु मूसा को इस कार्य के करने के लिए चुना।[11] परमेश्वर ऐसी कलीसिया से कैसे जागृत (उत्तेजित) हो सकता है जो अपने पादरी को परमेश्वर की आवाज होने के लिए कहती हो?

---

11. इब्रानियों 12:18-29

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

यीशू ने पतरस के उस हृदय का सामना करने के बाद—जिसने यीशू का इन्कार किया था पुकार कर पतरस से कहा 'मेरे पीछे हो ले' (यूहन्ना 21:15-22)। 'मेरे पीछे हो ले'—इन शब्दों का अर्थ यह है कि उसके पीछे हो लेना जो आगे है, साथ हो लेना, साथ जाना एक सहायक की तरह।[12] वो उन लोगों को जीवन का जल देता है जो सचमुच व्यस्तता में से समय निकालकर उसके साथ अकेले में समय व्यतीत करते हैं। वो बहुत ही प्रेम के साथ अपने हृदय की बातें बताता है—कैसे हो सकता कि वो हमसे अपने हृदय की बातें करें और हमें उससे प्रेम न हो?

यीशू मसीह हमें कैसे शीतल ताजा करनेवाला जीवन जल दे पाएगा जब तक हम उसके पास जाकर पीना नहीं सीखेंगे?

प्रार्थना का वो गुप्त कमरा यीशू मसीह के साथ गुप्त बातचीत के लिए होता है जो सर्वदा अपने पवित्र लोगों के लिए प्रार्थना (निवेदन) करता है। हम उसे यह अनुमति देना सीख सकते हैं कि वो हमारी प्रतिदिन की कार्य सूची तैयार करे। यीशू मसीह, जो विश्वास का कर्ता और सिद्ध करनेवाला है वो प्रतीक्षा करता है उन लोगों की पुकार के लिए जो प्रकाशन मन्ना की रोटी खाने के लिए इच्छुक हैं। वो जीवन जल को उन सबके पास ले जाता है जो प्यासे हैं, और वो जल स्वयं एक जल का सोता बन जाएगा, जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा। उसका प्रेम हमें उसकी तरफ कैसे प्रेरित (आकर्षित) करता है जब हम निर्बल होते हैं, और कितनी शीघ्रता से हमें बलवन्त करता है जब हम उसकी उपस्थिति में स्थिर होना सीख लेते हैं, जिस तरह एलिय्याह ने सीख लिया था![13] हम उसके सम्मुख स्थिर होना सीखते हैं जब, उसके विश्राम में प्रवेश करते हैं अपने कामों से विश्राम लेते हुए[14], उसे अनुमति देते हैं कि वो अपना कार्य करे। हमें कभी-भी जीवन जल के सोते को नहीं त्यागना चाहिए, और अपने प्रभु और शिक्षक यीशू मसीह के साथ एक तरफ की बातचीत के लिए सहमत नहीं होना चाहिए।

---

12. स्ट्रोंग्स कोनकोर्डेंस,
13. 1 राजा 19:12
14. इब्रानियों 4:9-11

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अध्याय-5

मेरे पिता के घर में

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुमसे कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

यूहन्ना 14:2-3

अपने प्रिय यीशू मसीह के साथ बारी (बगीचे) में बैठना क्या ही आनन्द की बात है, जो यह अधिक अभिलाषा रखता है कि वो हममें से प्रत्येक को परमेश्वर के सिंहासन लगी हुई उपस्थिति में प्रवेश करना और विश्राम करना सिखाए।

यूहन्ना 17:22 में यीशू ने यह प्रार्थना की, ''वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं।

मैं 'यह विश्वास करता हूं कि हर एक प्राणी की यह अभिलाषा रहती हैं कि वो परमेश्वर के साथ एक हो। यह वो इच्छा है जिसे उत्पन्न किया जाता है।

युहन्ना 14 में, परमेश्वर हमारे भविष्य के विषय में अद्‌भुत वर्णन करता है :

यूहन्ना 14:1-2

तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखें मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं। यदि न होते, तो मैं तुमसे कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

कितनी ही बार मैंने इन वचनों को पढ़ा है और अपने उस भविष्य के घर (महल) के बारे में सोचकर जो स्वर्ग में सिर्फ मेरे लिए तैयार किया गया है बहुत ही संतोष (सुख/आनन्द) पाया है। यह बहुत ही सरल है उन सब सुख-आराम (सुख-विलास) की वस्तुओं की कल्पना करना जो हम चाहते हैं कि हमारे लिए स्वर्ग में हों। यह निश्चय हमारे भविष्य के स्वर्ग का दृश्य है। परन्तु एक दिन जब मैं इन्हीं वचनों को पढ़ रहा था, तब परमेश्वर ने मुझे कुछ वो सच्चाई दिखाई जिन्होंने मेरा ध्यान अपनी ओर केन्द्रित कर लिया।

''बहुत से रहने के स्थान''--इस वचन का सही अनुवाद है--''निवास स्थान, रहने का घर अथवा 'घर, डेरा, निवास'। जब मैं इन वचनों पर विचार करने लगा, तब पवित्र आत्मा मुझे यह दिखाने लगा कि यह वचन केवल उस भविष्य के स्थान के विषय में नहीं है।

यूहन्ना 14:3

और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूंग, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।

इन वचनों को समझने की कुंजी इस बात के पहचान ने में है कि यीशू आत्मा के द्वारा उस स्थान के बारे में बता रहा है।

जो आत्मा में है ***जहां मैं हूं।*** वो यह नहीं कह रहा कि ''जहां मैं था'', अन्यथा ''जहां मैं होऊंगा'', परन्तु ''जहां मैं हूं।'' दूसरे शब्दों में, जहां यीशू मसीह आज (अभी) है, आप भी वहां हो सकते हैं। यह स्थान आत्मा में है, यह कोई स्पर्शनीय (शारीरिक) स्थान नहीं है।

यीशू को स्वर्ग जाना जरूरी था जिससे की वो सहायक, पवित्र आत्मा आ सके (यूहन्ना 16:7) यीशू मसीह का स्वर्ग पर जाने का एक और उद्देश्य यह था कि वो आपके लिए आत्मा में (पवित्र आत्मा में) रहने के लिए स्थान तैयार कर सके, कि आप भी वहां हो सकें जहां यीशू मसीह है।

आप सोच रहे होंगे कि, ''मैं तो कुलुस्सियों 1:26-27 के अनुसार सोचता था कि मसीह मुझमें रहता है, जो महिमा की आशा है,'' और ऐसा

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

सोंचने आप बिलकुल सही है। मसीह निश्चय प्रत्येक नया जन्म पाए हुए विश्वासी में है। परन्तु इसे थोड़ा समझने की कोशिश करें—वह स्थान जहां हम यीशू से मिलते हैं वह एक आत्मिक स्थान है, और वह प्रेम का और संगति का स्थान पिता (परमेश्वर) और यीशू मसीह के साथ आत्मा में एक स्थान है। यीशू मसीह आपके लिए यही स्थान तैयार करने के लिए गया था जिससे कि आप जब चाहें तब वहां जा सकें।

दाऊद ने इस स्थान को भजन संहिता 91:1 में कुछ इस प्रकार से कहा है : ''परम प्रधान के छाए (गुप्त) हुए स्थान में।'' यूहन्ना ने इस स्थान को परमेश्वर की मेज पर भोजन करने का स्थान कहा है (प्रकाशितवाक्य 3:20)।

एक भी जन ऐसा नहीं है जिसने परमेश्वर के साथ समीपता का आनन्द उठाया हो, जो परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत रूप से चला हो और उसके राज्य के लिए बहुत से अद्‌भुत कार्यों को पूरा किया हो इस बात को समझने में असफल हुआ हो और इस आत्मिक सच्चाई को कार्य में न लाया हो : कि आपकी और मेरी सृष्टि इसलिए की गई है कि हम यीशू मसीह के साथ गहरी संगति रखें, और मसीह के द्वारा पिता के साथ संगति रख सकें। इसीलिए यीशू आया और आपके लिए मरा। आत्मा के द्वारा चलना हमें यीशू मसीह के साथ उस प्रेम के स्थान में प्रवेश करना सिखाता है।

पूर्वकाल से एक शब्द (आवाज/वाणी)

मुझे अपनी प्रिय पुस्तक *'द इमीटेशन ऑफ क्राइस्ट'*—(अर्थात् मसीह का अनुकरण) में से आपके साथ कुछ बातें बताने दें। यह पुस्तक एक साधू जिनका नाम थामस अ' केमपिस था, उन्होंने इस पुस्तक को सन् 1400 में लिखा था। उनके द्वारा लिखे गए एक लेख में, जिसका नाम था 'ऑफ द इन्वर्ड स्पीकिंग ऑफ क्राइस्ट टू आ फैथफुल सॉल'' (अर्थात् मसीह का भीतरी बोल (शब्द) प्रत्येक विश्वासयोग्य प्राण में) में उन्होंने लिखा :

मैं ध्यान लगाऊंगा, एक धार्मिक प्राण यह कहता है, और मैं सुन लूंगा जो मेरा प्रभू यीशू मुझे कहेगा। धन्य है वह मनुष्य जो यीशू को अपने प्राण में बोलते हुए सुन लेता है, और वो जो उसके मुंह में से विश्राम (सुख/शांति; देनेवाले

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

शब्द को ले लेते हैं।[15]

धन्य हैं वह कान जो यीशू की गुप्त धीमी (वाणी/शब्द) आवाज को सुनते हैं, और इस संसार की धोखा देनेवाली आवाज की ओर ध्यान नहीं देते, और धन्य हैं वो अच्छे निष्कपट कान जो बाहरी आवाज की ओर ध्यान नहीं लगाते परन्तु जो परमेश्वर प्रत्येक प्राण के भीतर बोलता और सिखाता है उसको सुनते हैं।[16] *धन्य हैं वह आंखें जो बाहरी व्यर्थ वस्तुओं के लिए बंद हैं और परमेश्वर के भीतरी चलन की ओर ध्यान देती हैं। वो भी धन्य हैं, जो गुण (सामर्थ) को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं और स्वयं को अच्छे शरीरिक और आत्मिक कार्यों (कामों) के द्वारा तैयार करते हैं जिससे कि वह...प्रतिदिन अधिक से अधिक गुप्त प्रेरणा और परमेश्वर की भीतरी शिक्षा को ग्रहण कर सकें। और धन्य हैं वह जो स्वयं को पूर्ण रूप से परमेश्वर की सेवा के लिए दे देते हैं और परमेश्वर की सेवकाई के लिए संसार की सब प्रकार की रुकावटें (उलझनें) अलग कर देते हैं।*

हे मेरे प्राण, उन बातों की ओर ध्यान दे जो पहले भी कहीं गई हैं और अपने इन्द्रियवश के द्वारों को बंद कर, जो आपकी पांच इन्द्रियां हैं, जिससे आप भीतरी रूप से सुन सकें कि यीशू आपके प्राण में क्या बोलता है। आपका प्रिय यों कहता है : मैं तुम्हारा स्वास्थ्य हूं, मैं तुम्हारी शांति हूं, मैं तुम्हारा जीवन हूं। तुम स्वयं को मुझमें बनाए रखो और तुम मुझमें शांति पाओगे। जो वस्तुएं आज हैं और कल नहीं होंगी उनके प्रति प्रेम को त्याग दें (छोड़ दें) और उन वस्तुओं की खोज करें जो सर्वदा तक बनी रहेंगी। सारी वस्तुएं जो थोड़े (अनन्तकाल) समय की हैं वो धोखा देने वाली हैं? और फिर कोई प्राणी आपके लिए क्या महत्व रखेगा यदि यीशू मसीह ही आपको त्याग दे तो? इस कारण, सब प्राणियों और संसारिक वस्तुओं को त्याग कर, स्वयं को ऐसा बनाएं जिसे देखकर परमेश्वर

---

15. मति 4:4—मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से (रेहमा—अर्थात् प्रकाशित मन्ना जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।

16. यूहन्ना 2:27 - और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुममें बना रहता है: और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

प्रसन्न हो सके, जिससे कि आप इस जीवन के बाद उस अनन्त जीवन में आएं जो स्वर्ग के राज्य में है।[17]

यीशू इस स्थान को तैयार करने के लिए गया था जहां पर उसकी आवाज सुन सकें, वह स्थान जहां पर हम प्रत्येक उस शब्द के द्वारा जीवन व्यतीत करना सीख सकें जो परमेश्वर के मुख से आता है। उसकी भेड़ उसकी आवाज को सुनती है, और उसके पीछे चलती है। वो भेड़ किसी और की आवाज के पीछे नहीं चलती। आत्मा की अगुवाई में चलने का अर्थ है यीशू की सम्मति की अगुवाई में चलना, उसका कलीसिया से सीधा बातचीत करना। ''यदि तुम मुझमें बने रहो और मेरी बातें तुममें बनी रहें...'' यूहन्ना 15:7। कैसे हो सकता है कि जिनसे आप प्रेम करते हैं उनके साथ आपका सम्बन्ध केवल इस बात पर निर्धारित हो जो उनके बारे में लिखा हुआ है, जो वास्तव में उनके साथ तीव्र बातचीत पर निर्भर करता है? कितना आनन्द है दूल्हे की आवाज को सुनने! यीशू मसीह, जिससे आप प्रेम करते हैं उसके साथ हर एक दिन रोमांचक होता है।

परमेश्वर का राज्य उसकी उपस्थिति है।

परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है; जो पवित्र आत्मा से होता है।[18] परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परन्तु सामर्थ में है[19], परमेश्वर का राज्य विचार के द्वारा नहीं आता (अर्थात् पांच इंद्रियों के द्वारा) परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।[20]

परमेश्वर का राज्य कोई स्थान नहीं है और कोई समय सूची भी नहीं है। परन्तु परमेश्वर का राज्य उसकी उपस्थिति है। यह परमेश्वर की उपस्थिति है जिसे हमें पहले खोजना है, और उसकी धार्मिकता को और बाकी सारी वस्तुएं भी हमें मिल जाएगी।[21] परमेश्वर की उपस्थिति तब आती है जब हम यीशू मसीह के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बनाते हैं जो प्रत्येक हृदय की अभिलाषा को पूरा (सिद्ध) करता है।

---

18. रोमियों 14:17-18
19. 1 कुरिन्थियों 4:20-21
21. मति 6:33।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

यीशू ही हमारे दिल की धड़कन होना चाहिए जिस प्रकार से शुनैमिन स्त्री अपने प्रिय गड़रिया युवक के साथ रहने के लिए तीव्र अभिलाषा रखती है। श्रेष्ठगति में, इसी प्रकार से हम भी यीशू मसीह की अभिलाषा में, जिससे हम प्रेम बढ़ते जाएंगे। अपना व्यक्तिगत समय उसकी खोज में प्रति दिन लगा कर उसके लिए भूखे रहें। हर एक मनुष्य जो उसे ढूढेगा उसे पाएगा।

उसे स्वीकार करना

मैं परमेश्वर से प्रार्थना किया करता था जब कभी भी मैं नीतिवचन 3:5-6 पढ़ता था। मैं यह प्रार्थना करता था कि, ''परमेश्वर, यदी मैं एक बार भी इन वचनों के अनुसार कर सकूं, तो मेरा हृदय धन्यवाद से भर जाएगा।'' फिर मेरा मिलना यीशू से हुआ, और मुझे यह समझ आने लगा कि इन वचनों का सा जीवन में उपयोग करना बहुत ही सरल है। इन वचनों के अनुसार जीवन व्यतीत करना इतना ही सरल है जितना कि सांस (श्वास) लेना :

नीतिवचन 3:5-6

तू अपनी समझ का सहारा न लेना; वरन सम्पूर्ण मन से यहेवा पर भरेसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधे मार्ग निकालेगा।

मुझे इन वचनों को समझाने के लिए प्रभू ने एक दृष्टान्त का उपयोग किया। उसने मुझे तीन पुल दिखाए जो एक के ऊपर एक थे। उदाहरण के रूप से, न्यू यॉर्क शहर में ऐसे पुल हैं। जिनमें दो प्रधान सड़के (हाईवे) है, एक दूसरे के ऊपर/नीचे की प्रधान सड़क से, जब आप ऊपर की ओर देखते हैं। तो देखने में ऐसा लगता है कि मानों आपके ऊपर एक छत हो, और आपको इसका विचार भी नहीं होगा कि आपके ऊपर एक और सड़क भी हो सकती है। प्रभू मुझे दिखा रहा था कि पुरूष और स्त्रियां नीचे के स्तर (नीचे कि प्रधान सड़क) पर यात्रा कर सकते हैं जो उनके प्राणों की प्रधान सड़क है (जहां पर एक मनुष्य का व्यक्तित्व, विचार, भावनाए और विवेक पाया जाता है।)परन्तु और फलवन्त होने के लिए वो सबसे ऊपर के स्तर पर यात्रा कर सकतें है, जो आत्मा की प्रधान सड़कर है। आत्माकी यह

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

प्रधान सड़कर प्राण और देह के ऊपर होती है। और इन दोनों के नीचे की प्रधान सड़क से यह बताना कठिन है कि आपके ऊपर आत्मा की एक और प्रधान सड़क भी हैं

फिर परमेश्वर ने मुझे वो मार्ग दिखया जिस से हम आत्मा की प्रधान सड़क में प्रवेश कर सकते है यदि हम परमेश्वर को स्मरण रखपकर प्रति दिन अपने कामों को किया करें। जब हम अपने व्यस्त जीवन में थोड़ा धीमा होते हैं और उसे स्मरण करते हैं, तो हम तुरन्त आत्मिक प्रधान सड़क पर आ जाते हैं और उस पर यात्रा करते है। प्राण और देह की प्रधान सड़कों पर यात्रा करना अधिक आनन्द से भरा होता है। परमेश्वर को स्मर्ण करने के लिए और सामर्थी होते जाते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम इसी प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करें। यदि आप चमत्कारों के क्षेत्र में रहना चाहते हैं तो, परमेश्वर को अपने सब कामों में स्मरण रखें, और उसकी धीमी आवाज को सुनना सीखें जो आपका मार्ग दर्शन करेगी।

मुझे एक हाल ही में घटित हुए उदाहरण से कुछ बताने दें, जब मैं रोमानिया से वापस लौट रहा था जो कि एक प्रचार संबन्धी यात्रा थी। भाई कार्ल फॉक्स और प्रभू के सेवकों के एक बहुत ही अच्छे समुदाय के साथ तीन सप्ताह अनेक गिरजा घरों में शिक्षा देने और गलियों और गावों में पवित्र लोगों के साथ प्रचार करने में व्यतीत किये।

रास्ते में घर लौटते समय मैं लन्दन में एक अद्‌भुत विश्वासी से भेंट करने के लिए रूका जिसने मेरी और पास्टर कार्लस फॉक्स की पुस्तक का आनन्द उठाया था, पुस्तक का नम है। '' डायनिंग एट द मास्टर्स टेबल : लर्निइंग टू हीयर द वॉइस ऑफ द लोर्ड'' (अर्थात अपने स्वामी के साथ उसकी मेज़ पर भोजन करना : परमेश्वर की आवाज़ की सुनना सीखना), और पास्टर कार्ल्स फॉक्स की पुस्तक का नाम: ''टर्निइग कर्सेस टू ब्लैसिंग्स''[22] संगति का बहुमूल्य समय बिताने के बाद, उस विश्वासी ने मुझे हवाई अड्डे पर बॉस्टन जाने के लिए छोड़ दिया।

---

22. ये दोनों पुस्तकें परमेश्वर की आवाज की आत्मविश्वासव के साथ सुनने के बारे में सिखाती है। और अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक के पीछे लिखे हुए किंग्डम फेथ मिनिस्टरीज़ के पते पर सम्पर्क करें।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

मैं हीथ्रो हवाई अड्डे के एक चिड़िया घर में गया। हवाई अड्डा हज़ारों की संख्या में क्रोधित लोगों से भरा हुआ था जिनकी उड़ान स्थगित (रद्द) हो गई थी। इस दिन यूरोप के सारे बड़े हवाई अड्डों ने अपने ट्रेफिक कंट्रौल सिस्टम को नए कम्प्यूटर में परिवर्तित करेन का फैसला किया था। सिस्टम का परिवर्तन असफल हो जाने के कारण अधिकतर (असफल) उड़ाने रद्द कर दी गइ थी। और यहां पर रह कर किस प्रकार अशीषें पाऊं यह विचार करना था परन्तु यह भी तब संम्भव था यदि एयर लाइन्स इसके लिये पैसा देती क्योंकि मैंने रोमानिया में अपना अधिकतम पैसा विश्वासियों की सहायता के लिए भेंट के रूप में दे दिया था। परन्तु ये समस्या तो वहां की सरकारी समस्या भी इसलिए कोई भी एयर लाइन्स खर्चे को उठाने की तैयार नहीं थी। यात्रियों का क्रोध और भी भड़क उठा जब ये घोषणा की गई कि अगले चार-पांच दिन तक कोई जहाज उड़ान नहीं भर पाएगा।

एक घंटे से ज्यादा मैं हज़ारों की संख्या में खड़े हुए लोगों की कतार में खड़ा रहा ओर तब मैंने यह पाया कि इस प्रकार कतार में खड़े रहने कीजगह मुझे कुछ और करना पड़ेगा। मैं टर्मिनल से से ऊपर नीचे की ओर आत्मा में गाते हुए चलने लगा। परमेश्वर ने हर परिस्थिति को अपने नियंत्रण (वश) में किया हुआ है, इसके लिए मैं उसकी प्रशंसा करने लगा। मैने इसकी प्रशंसा की क्योंकि वह इस पृथ्वी की नेव डालने से भी जानता था। मैंने अपनी प्रिय पत्नी रीटा को फोन किया कि इस समस्या के लिए प्रेयर टीम मिलकर प्रार्थना करें। मैंने परमेश्वर पर अपने सम्पूर्ण हृदय से भरोसा रखना शुरू किया, और जैसे-जैसे मैने उसे स्मर्ण किया, उसने मेरा मार्ग दर्शन किया।

परमेश्वर की प्रशंसा करते समय मेरे मन में एक विचार आया कि टिकट कार्यकर्ता के पास जाकर बातचीत करूं। मैं अपनी आत्मका में यह जानता था कि यह विचार मुझे परमेश्वर की ओर से आया है टिकट लेने की कतारें बिल्कुल खाली थी क्योंकि सब असहाय यात्री कस्टमर सर्विस (ग्राहक सेवा) की कतारों में खड़े होकर कार्यकर्ताओं पर क्रोधित हो रहे थे।

टिकट कार्यकर्ता ने मुझे बताया कि एक ही ऐसा जहाज है जिसकी

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

उड़ान रद्द नहीं हुई है जो बॉस्टन को जा रही थी, उसने मुझसे कहा कि वो मेरा नाम प्रतीक्षा सूची में उस उड़ान के लिए डला देगी परन्तु उस सूची में मेरा नाम 30 नंबर पर होगा। इस जहाज में जगज मिलने की बहुत कम आशा थी क्योंकि जाने वाले बहुत लोग थे। टर्मिनल पर परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए मैने तीन घंटे प्रतीक्षा करी। तब परमेश्वर ने मुझे बताया कि मैं निश्चय इस जहाज में जा पाऊंगा। हल्लिलूय्याह! अब मुझे रेमा प्रकाशन शब्द मिल गया था, और मैने सीखा है कि परमेश्वर का कोई भी रेमा शब्द असम्भव नहीं होता। (लूका 1:37) अन्त में वह समय आया जब प्रतीक्षा सूची में से नाम पढ़े गए। मैने एक स्त्री के सवाल का उत्तर देना समाप्त किया था, जिसका ना प्रतीक्षा सूची में 28 नवम्बर पर था। मैं उसे यीशू मसीह के विषय में बता रहा थ, और उस ने मुझसे पूछा, ''मुझे ये आशा है कि आप इस जहाज के लिए प्रार्थना कर रहे होगें?'' मैने उसे विश्वास दिलाया कि मैंने इन सब बातों के लिए प्रार्थना की है, और उसी का समय टिकट कार्यकर्त्ता ने उस सूची में से नामों को पुकारना शुरू किया है। अब उड़ान भरने में में सिर्फ पंद्रह मिनट रह गये थे, और जहाज तक पहुंचने का रास्ता लम्बा था। कार्यकर्त्ता ने पहला नाम पुकारा दूसरा नाम जो उसने पुकारा वह मेरा था। परमेश्वर ने मेरे नाम की 30 नम्बर से 2 नम्बर में परिवर्तित कर दिया।

मैं बहुत ही तेजी से जहाज तक पहुंचा, और जल्दी से अपनी सीट पर बैठ गया। कुछ ही पल में, एक पुरूष जल्दी से मेरे साथ वाली सीट पर आकर बैठ गया। अगले दो घंटे का समय बहुत ही आनन्द का था, मैं इस भाई को यीशू मसीह के बारे में बताता रहा, जिसने बाद में मुझे बताया कि उसनेप्रभू की बातों का कितना आनन्द उठाया, और किस तरह उसे हवाई जहाज में बाते करने से घृणा थी और वो जहाज में किसी से भी बातें नही करता था। उसने अपने जीवन की सब बातें मेरे आगे खोलकर बता दी। उसने परमेश्वर में नया जन्म पाया हुआ था, परन्तु वो पहले कभी नहीं जान पाया था कि परमेश्वर चाहता था कि वो परमेश्वर की समीप आना सीखे, जिससे कि वो उसकी आवाज़ को सुन सके और उसके साथ संगति में बढ़ सके।

आप देखें, किस तरह परमेश्वर हमारी सहायता करने के लिए तैयार

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

है कि हम आत्मा के द्वारा चल सकें वो हमारी अगुवाई करने के लिए अत्यन्त उत्साहित है जब हम अपने सब कामों को उसे स्मरण रखकर करते हैं हमारा आनन्द यही है कि हमारे अन्दर भी यही मन हो जो मसीह यीशू में था[23], और अपनी देह और प्राण की सड़क पर यात्रा करने की जगह परमेश्वर के आत्मा की प्रधान सड़क पर यात्रा करना सीखें। यीशू यही स्थान हमारे लिए तैयार करने के लिए गया था कि हम भी वहां जा सके और उसमें रह सकें उसने ऐसा इसलिये किया कि हम उस स्थान को आज ही जान सकें।

इससे बढ़कर आनन्द की कोई बात नहीं कि हम हर पल यीशू मशीह और पिता की संगती में चलते रहे। वह आपको प्रेम करता है, और आप आमंत्रित किये जाते हैं राजा की उपस्थिति में समय बिताने के लिए।

आपका स्वागत किया जाता है कि आप उसे अनुमति दें कि वो आपको सुखदाई जल के झरने के पास ले जाएं, जहां वो आपके प्राणों को बिलकुल नया कर देता है। वो धनवान व्यक्ति उन सब वस्तुओं को नहीं त्याग पाया जो उसे इस जीवन में प्रिय थीं परन्तु उन वस्तुओं को पकड़े रहना चाहता था। जब हम यीशू मसीह से प्रेम करते हैं तो हमें यह समझ आने लगता है कि इन सब वस्तुओं कि पकड़ हम पर बहुत ढीली है। उस पुरुष की तरह जो उस भूमि को खरीदने के लिए तैयार हो गया था जिसमें यीशू के साथ गहरी मित्रता का धन (खज़ाना) छिपा था, और वो अपना सब कुछ बेचकर उसे खरीदने के लिए इच्छुक था, यीशू मसीह के साथ सम्बन्ध में ऐसा धन पाया जाता है, कि हम इच्छुक रहते हैं कि अपने व्यस्त जीवन में से समय निकालकर अधिक से अधिक समय अपने प्रिय के साथ व्यतीत करें।

क्या आप भी पौलुस की तरह अपने अरब देश जाने के लिए इच्छुक हैं?

परमेश्वर आपको अपनी उपस्थिति के आनन्द से भरे। प्रभु ऐसा करें कि आप उसके साथ अधिक प्रेम में बढ़ने के लिए तत्पर रहें, क्योंकि परमेश्वर का वचन यह कहता है कि जो उसे खोजते हैं वो उसे पा लेते हैं।

---

23. फिलिप्पियों 2:5

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अध्याय-6

उसके हृदय की अभिलाषा

> *हे मेरी कबूतरी, पहाड़ की दरारों में और टीलों के कुंज में तेरा मुख मुझे देखने दे, तेरा बोल मुझे सुनने दे, क्योंकि तेरा बोल मीठा, और तेरा मुख अति सुन्दर है।*
>
> *श्रेष्ठगीत 2:14*

सुलेमान द्वारा लिखी गई पुस्तक, श्रेष्ठगीत, से बढ़कर पूरी बाइबिल में कोई और पुस्तक नहीं है जो परमेश्वर की अभिलाषा उसकी दुल्हन के लिए बताती हो। इस पुस्तक में, परमेश्वर अपने हृदय को प्रगट करता है। हमेशा से उसकी इच्छा एक पूर्ण रूप से समर्पित दुल्हन के लिए रही है जो निर्दोष, स्वच्छ और पवित्र हो, और निरंतर परमेश्वर द्वारा धोई गई हो, यह सब केवल अपने प्रिय के लिए भूख के कारण।

दूल्हा उन सब लोगों के कारण बहुत ही आनन्दित होता है जो उसके पास आते हैं, उस प्रेम के कारण जो केवल उसके लिए हो। यह वह कुंवारी है जिसे वो खोजता है--वो दुल्हन जिसकी आंखों में अपने दूल्हे के लिए ही प्रेम हो और किसी और के लिए नहीं।

श्रेष्ठगीत 1:2

वह अपने मुंह के चुम्बनों से मुझे चूमे! क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है।

दुल्हन उसे पाने के लिए अत्यन्त अभिलाषा से अपनी यात्रा शुरू करती है। दुल्हन अपने पहले प्रेम को लेकर स्वप्न देखती है, और अपने दूल्हे से मिलने वाले प्रेम को सोचती है। वो उस पर विश्वास करती है, और यही कल्पना करती है कि वो उसकी उपस्थिति में है। दूल्हे की केवल उपस्थिति ही उसकी तीव्र अभिलाषा को तृप्त कर देती है।

परन्तु, कुछ समय के बाद उसकी अभिलाषा और बढ़ जाती है। इस दुल्हन ने परमेश्वर की बांहों को अपने चारों ओर अनुभव किया है। वो अपनी दुल्हन के लिए सामर्थी ठहरा जब दुल्हन ने स्वयं को निर्बल समझा। वो

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

उसके बहुत पास आ गया, उसे शान्ति देने जब वो डरी हुई थी, और जब उसे प्रोत्साहन के शब्द की आवश्यकता थी। परन्तु अभी-भी वो उसकी नहीं थी। वो उसके पास गई जब उसे आवश्यकता थी, उसने उसे धन्यवाद दिया, और फिर अपने मार्ग पर चली गई। वो अभी उसकी दुल्हन नहीं बनी थी।

श्रेष्ठगीत 1:3

तेरे भांति भांति के इत्रों का सुगन्ध उत्तम है, तेरा नाम उंडेले हुए इत्र के तुल्य है; इसलिए कुमारियां तुझसे प्रेम रखती हैं।

फिर वो दिन आया जब उसने यह विचार किया कि उसे परमेश्वर से मिलने वाले ध्यान की आवश्यकता है। अब उसके विचार अपने दूल्हे के विचारों से मेल खाने लगे, और जितना अधिक वो वहां रहने लगी जहां वो रहता है, तो अब उसका हृदय केवल दूल्हे के नाम को सुनके ही अति आनन्द से भर गया।

अब वो उसे पुकारते-पुकारते बढ़ने लगी, कि वो उसके जीवन में आ जाए। अपने जीवन के कार्यों को अपने अनुसार करने की अभिलाषा को उसने छोड़ दिया है, परन्तु दूल्हे से कहती है कि वो उसके जीवन को चलाए, जिससे कि वो अपना समय दूल्हे की धीमी आवाज को याद करने में बिता सके। कुछ समय पहले उनकी एक दूसरे से केवल जान-पहचान थी। अब वो दोनों एक-दूसरे को सराहने वाले बन गए हैं। अब उसकी दुल्हन ने यह समझ लिया है कि वो दूल्हे के साथ निरन्तर रहने की अभिलाषा से भरी हुई है।

श्रेष्ठगीत 1:4

मुझे खींच ले; हम तेरे पीछे दौड़ेंगे। राजा मुझे अपने महल में ले आया है हम तुझमें मगन और आनन्दित होंगे; हम दाखमधु से अधिक तेरे प्रेम की चर्चा करेंगे।

अब वो उसके साथ और भी अधिक समय व्यतीत करने के लिए व्यतीत करने के लिए व्याकुल है, और यह वो समय है जब दूल्हे की भी अभिलाषा उसके लिए बढ़ने लगती है। कौन दुल्हन से निरन्तर मिलने वाले प्रेम के सामने अपने आपको रोक सकता है। जो हर पल सुन्दर, स्वच्छ और प्रकाश से परिपूर्ण होती जाए, अपना हर पल दूल्हे की खोज में लगाने के कारण?

श्रेष्ठगीत 1:5 6

हे यरुशलेम की पुत्रियों, मैं काली तो हूं परन्तु सुन्दर हूं, केदार के तम्बुओं के और सुलेमान के पर्दों के तुल्य हूं।

मुझे इसलिए न घूर कि मैं सांवली हूं, क्योंकि मैं धूप से झुलस गई।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

मेरी माता के पुत्र मुझसे अप्रसन्न थे, उन्होंने मुझ को दाख की बारियों की रखवालिन बनाया; परन्तु मैंने अपनी निज दाख की बारी की रखवाली नहीं की!

प्रभू की दुल्हन जानती है कि वो सुन्दर है, उसने यह समझ लिया है कि ऐसा कोई कारण नहीं है कि जिसके लिए वो अपने आपको दूल्हे के सामने दोषी, या अयोग्य समझे अपनी गल्तियों की ओर उसने दृष्टि करना बंद कर दिया है। तो भी वो अपने गुणों और योग्यता के लिए घमंड नहीं करती। परन्तु दिन और रात उसका एक ही लक्ष्य होता है--कि वो निरन्तर अपने प्रिय दूल्हे के साथ रहे। अब केवल उसके साथ रहने के सपने देखना उसके लिए काफी नहीं है। अब वो उसे अपने जीवन में लेना चाहती है--उस पर अधिकार रखने के लिए नहीं, परन्तु घर जाने के लिए; उसे बदलने के लिए नहीं, परन्तु उसे प्रसन्न करने के लिए; उसके सामने ग्रहण योग्य होने के लिए नहीं, परन्तु यह जानने के लिए कि वो पहले से ही दूल्हे की दृष्टि में ग्रहण योग्य है।

उसके बहुत से मित्र और सम्बन्धी है जो उसे अपने प्रिय के पीछे चलने से हटाने का प्रयत्न करते हैं। वो कहेंगे कि ''उसे नहीं जाना जा सकता,'' और उसे पाया भी नहीं जा सकता,'' अन्यथा, वो कहेंगे कि ''नहीं, वो तुम्हारा मित्र नहीं हो सकता जो तुम्हारी पसंद में अपनी रुचि रखेगा, क्योंकि उसके पास और भी बहुत कुछ है करने के लिए।''

श्रेष्ठगीत 1:7

हे मेरे प्राणप्रिय मुझे बता, तू अपनी भेड़-बकरियां कहां चराता है, दोपहर को तू उन्हें कहां बैठाता है; मैं क्यों तेरे संगियों की भेड़-बकरियों के पास घूंघट काढ़े हुए भटकती फिरूं?

दुल्हन का परा ध्यान उसके दूल्हे कि ओर हो गया है और जब वो उसे खोजेगी तब उसे पालेगी, क्योंकि दूल्हा भी, उसके प्रेम से मोहित हो चुका है।

क्या आप इस युवती की तरह हैं, जो लगातार अपने प्रेम का पीछा करती रहती है? क्या आप उसके साथ अकेले में समय बिताने के लिए दौड़ते हैं? यह उस दुल्हन का संदेश है जिसने अपनी आंखों को केवल अपने होनेवाले पति कि ओर लगाया हुआ है। क्या आपके हृदय की भी यह लालसा है? वो अपनी दुल्हन को अपने कोमल प्रेम से विवश करता है, और बदले में ऐसा ही समर्पण वो हमारे हृदय का भी चाहता है। उसकी ओर दौड़कर जाएं, और इस जीवन की कोई भी वस्तु को अपने और अपने प्रेमी के बीच में न आने दें। कौन सा समय उस समय से अधिक बहुमूल्य होगा जो उसकी उपस्थिति में बिताया जाए उस जीवन जल के झरने से पीते हुए, जीवन जल का वो सोता जो स्वयं यीशु मसीह है?

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

अध्याय-7

मेम्ना उनकी रखवाली करेगा

> *क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखवाली करेगा; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।*
>
> प्रकाशितवाक्य 7:17

मेम्ना हमारा जीवन है। उसके लहु के बहने से हम धोकर साफ हुए हैं। वो धार्मिकता के नये वस्त्र देता है जब हम उसके पास जाते हैं उन वस्त्रों को ग्रहण करने के लिए। अराधना की वो वेदी जिसे हम अपने हृदय में बढ़ने के लिए अनुमति देते हैं श्रेष्ठ हो जाती है। उसकी उपस्थिति में हम अपने हृदयों को उसकी ओर खिंचने देते हैं जब-जब हम मेम्ने के साथ अकेले में समय व्यतीत करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 7:9-10

इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने का जय-जयकार हो।

प्रकाशितवाक्य, अध्याय 7 कि शुरुआत परमेश्वर के उन 1,44,000 मुहर लगे हुए सेवकों से होती है जिन पर ये मुहर नाश होने से बचाने के लिए लगाई गई है। प्रकाशितवाक्य 7:9 में दृश्य बदलकर और लोगों की ओर हो जाता है, एक ऐसी बड़ी भीड़ की ओर जिसे कोई गिन नहीं सकता जो हर एक जाति, कुल, लोग और भाषा के हैं। वह लोग धार्मिकता के श्वेत

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

वस्त्र पहने और अपने हाथों में अराधना की खजूर की डालियां लिए हुए मेम्ने के सामने खड़े हुए हैं। वो बड़े शब्द से पुकार कर उद्धार के लिए परमेश्वर की और मेम्ने की जय-जयकार करते हैं। कितना अदभुत दृश्य है ये!

प्रकाशितवाक्य 7:11-13

और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के सामने मुंह के बल गिर पड़े; और परमेश्वर को दण्डवत करके कहा, आमीन। हमारे परमेश्वर की स्तुति, और महिमा और ज्ञान और धन्यवाद, और आदर, और सामर्थ और शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन। इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा; ये श्वेत वस्त्र पहिने हुए कौन हैं? और कहां से आए हैं?

स्वर्गदूत चारों ओर खड़े हैं और सारे आत्मिक प्राणी परमेश्वर की उपस्थिति में गिर पड़े और उसकी अराधना करने लगे। क्या आपने अपने प्रार्थना के कमरे में परमेश्वर के सामने ऐसा किया है, उसके अद्‌भुत स्वभाव का वर्णन अपनी पूरी सामर्थ के साथ?

इसके बाद यह सवाल उठता है कि, ये सब लोग कौन हैं जो श्वेत वस्त्र पहने हुए हैं जो हर एक जाती, कुल और भाषा से हैं? ये सब कहां से आए हैं?

प्रकाशितवाक्य 7:14-17

मैंने उससे कहा; हे स्वामी, तू ही जानता है : उसने मुझसे कहा, ये वे हैं, जो उस बड़े क्लेश में से निकलकर आए हैं; इन्होंने अपने अपने वस्त्र मेम्ने के लहू से धोकर श्वेत किए हैं। इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उन के ऊपर अपना तम्बू तानेगा। वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे : और न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी। क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखवाली करेगा : और उन्हें जीवनरूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

ये पृथ्वी के वो लोग हैं, जिन्होंने अपना जीवन बड़े क्लेश में विश्वास के साथ बिताया है। प्रियों, इस बड़े क्लेश को वो महा-क्लेश न समझे जो पृथ्वी पर आनेवाला है और जिसके बारे में और जगहों पर भी लिखा गया है। वो क्लेश जो मनुष्य प्रतिदिन पृथ्वी पर उठाता है, उसे महा (बड़ा) क्लेश भी कहा गया है। यीशू ने इस शब्द का प्रयोग अपने चेलों से यूहन्ना 16:33 में भी किया है : *मैंने ये बातें तुमसे इसलिए कहीं हैं, कि तुम्हें मुझमें शान्ति मिले, संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो मैंने संसार को जीत लिया है।* उसने मति 24:21 में कहा कि अन्त के दिनों में क्लेश समय के साथ बहुत बढ़ता जाएगा, यहां पर वो हमें सावधान करता है कि जब लड़ाइयां, लड़ाइयों की चर्चा, मंदिर का अपवित्र किया जाना देखो तो इन सब बातों के होते हुए भी हम दृढ़ और विश्वासयोग्य रहें।

यह वही क्षण है। पवित्र लोग जो सिंहासन के सामने श्वेत वस्त्र पहन कर खड़े हैं, जिन्होंने अपने वस्त्रों को मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत किया है, ये वो लोग हैं जो निरन्तर जीवन जल के सोते से पीते रहे, पृथ्वी पर की क्लेश से भरी यात्रा के समय। *यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिए।*[24]

परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा : वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।[25]

अब प्रकाशितवाक्य 7:15 की ओर ध्यान दे :

इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और उसके मंदिर में दिन-रात उसकी सेवा करते हैं; और जो सिंहासन पर बैठा है, वह उनके ऊपर अपना तम्बू तानेगा।

मित्रों, यीशू मसीह का उसके लोगों के बीच डेरा करना आत्मा में एक वर्तमान सच्चाई हैं यह हमारे लिए एक सच्चाई है जब उसके वचन हममें बने रहते हैं। यूहन्ना 15:7-8 हमें बताता है कि : *यदि तुम मुझमें बने*

---

24. यूहन्ना 7:37
25. यूहन्ना 4:14

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

रहो, और मेरी बातें (रेमा प्रकाशन) तुममें बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। यीशू पहले से ही उन लोगों के बीच में डेरा किए हुए है जो प्रभू की आवाज को सुनते हैं! यीशू जो महिमा की आशा है उनमें स्वयं वर्तमान है। यदि हम निरन्तर उसके सोते में से पीएंगे (वो शब्द जो वो हमारी आत्मा में बोलता है) तो हम उसके सामने स्वच्छ धार्मिकता के वस्त्रों में खड़े होंगे! हम उसकी आवाज को सुनते और उसकी आज्ञा मानते हैं, रात और दिन उसकी सेवा करते हैं। उसका पवित्र स्थान कितना ही महिमा से भरा हुआ स्थान है जहां हम उसके प्रेम में और बढ़ते जाते हैं। उसकी स्वर्ग से मिलने वाली रोटी अद्‌भुत रीति से सामर्थी बना देती है, वो शब्द जो उसके मुंह से निकलते हैं। वो जल क्या ही ताजा करनेवाला जल है जिसे हम उस सोते से पीते हैं जो उसके होठों (मुख/मुंह) से बहता है!

प्रकाशितवाक्य 7:16-17

वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे : और न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी।

क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है, उनकी रखवाली करेगा; और उन्हें जीवनरूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।

मेम्ना अपनी कलीसिया की स्वयं रखवाली करता है। वो उसे अपने *रेमा* शब्द के जल से धोता है। वह अपने सिंहासन के बीच में है, जिसके सिंहासन का कुछ भाग (अंश) हमारे हृदय की वो वेदी है जिसे हम उसके लिए तैयार करते हैं, और वह हमें अपने साथ बिठाएगा, उनको जो उसके सोते में से पीएंगे और उसके साथ मेज पर बैठेंगे उसकी आवाज (शब्द/वाणी) को सुनने के लिए।[26]

---

26. प्रकाशितवाक्य 7:17, मति 4:4, यूहन्ना 10:27, यूहन्ना 14:1-7, इफिसियों 5:25-27, इब्रानियों 12:25-29, और प्रकाशितवाक्य 3:20-22

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

प्रकाशितवाक्य 22:1,16-17

फिर उसने मुझे बिल्लौर की झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचोंबीच बहती थी। मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिए भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे : मैं दाऊद का मूल, और वंश और भोर का चमकता हुआ तारा हूं। और आत्मा और दुल्हन दोनों कहती हैं; आ; और सुननेवाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।

बहुत से परमेश्वर के बच्चों के लिए, प्रकाशितवाक्य के ये शब्द पूर्णरूप से भविष्य के बारे में हैं। परन्तु उसकी दुल्हन के लिए जो अभी से ही जीवन जल की नदी में से पी रही है, उसके लिए यह शब्द वर्तमान हैं। समय का स्वर्ग में कोई अर्थ नहीं है। जिसके लिए एक दिन एक हजार साल के बराबर हैं, और एक हजार साल एक दिन के बराबर हैं, वो केवल प्रत्येक हृदय की तैयारी की ओर देखता है। क्या वो इतना आत्मिक जल पी रहे हैं और आत्मिक रोटी खा रहे हैं जितना जरूरी (पर्याप्त) है? क्या ये जीवन के शब्द उनमें बने हुए हैं? कितने प्रेम के साथ मेम्ना उनकी अभिलाषा करता है जो उसके पास आने के लिए और उससे पीने के लिए प्यासे हैं, और जीवन जल के सोते को अनुभव करना चाहते हैं जो हमारी भविष्य की महिमा को आत्मा में वर्तमान बना देता है। हम उसकी अद्‌भुत उपस्थिति में उसके सिंहासन के सामने खड़े हैं, जो धोकर साफ किए गए हैं, बिना किसी दाग, झुर्री के, निर्दोष और निष्कलंक उसकी वाणी के द्वारा जो जल के ऊपर है।

Kingdom Faith Ministries International, Inc.
PO Box 725
Charlemont, MA 01339 * USA
Web: www.KingdomFaithMinistries.Org
© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.

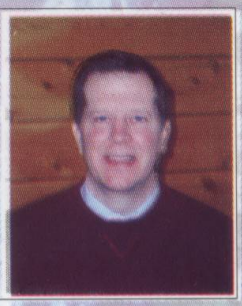

परमेश्वर की वाणी जल के ऊपर

पास्टर पौल नोरक्रौस प्रभु यीशु मसीह के अभिषिक्त दास है। वह प्रभु के वचन और पवित्र आत्मा की शाश्वत सामर्थ को पूरे विश्व के राष्ट्रों में फैला रहे हैं। वह अमेरिकन जल सेना में उच्च पद पर आसीन थे। जब उन्होंने प्रभु की बुलाहट को सुना; तत्काल उन्होंने सबकुछ छोड़ा और प्रभु की सेवा में जुट गए। पास्टर पौल पूरे अमेरिका में और भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में प्रभु की भेड़ों को, यह सिखाते हैं कि प्रभु की आवाज को कैसे सुनना है। आप "किंगडम फैथ मिनस्ट्रीज़" के संस्थापक हैं, और 'मारानाथा बाईबल चैपल' के पासवान है। आप मैसाच्यूट्स (अमेरिका) में अपनी पत्नी रीटा और तीन बच्चों सहित रहते हैं।

किंगडम फैथ मिनस्ट्रीज़

पोस्ट बॉक्स 725

पारलैमोंट, मैसाच्यूट्स 01339 अमेरिका

e.mail:kingdom8@juno.com

website:http://www.kingdomfaith.org

Kingdom Faith Ministries International, Inc.

PO Box 725

Charlemont, MA 01339 * USA

Web: www.KingdomFaithMinistries.Org

© 2003 Paul D. Norcross. All rights reserved. Permission freely granted to copy if copied in the entirety.